

[2023] 2 एस. सी. आर 326

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

ए.

मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड बनाम

मेसर्स इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन। लिमिटेड और ओ. आर. एस. (2010 की सिविल अपील संख्या 3504-3505)

बी.

फरवरी 08,2023

**[संजय किशन कौल और अभय एस. ओका, जेजे।]**

भारत का संविधान-कला।226, 12, 14 - वाणिज्यिक अनुबंध-असमान सौदेबाजी की शक्ति-रिट याचिका की स्थिरता-पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने आई. पी. सी. एल. (पूर्व में एक सार्वजनिक उपक्रम) को प्राकृतिक गैस के आवंटन के लिए एक पत्र जारी किया-आई. पी. सी. एल. ने प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के लिए गेल के साथ एक अनुबंध किया-आवंटन की शर्तों के अनुसार, आई. पी. सी. एल. को अपनी पाइपलाइनें बिछानी थीं और केवल उन पाइपलाइनों का उपयोग गैस ले जाने के लिए किया गया था-आई. पी. सी. एल. ने पाइपलाइनें निर्धारित कीं-हालाँकि, गेल ने अनुबंध के संदर्भ में 'परिवहन शुल्क के नुकसान' के लिए शुल्क लगाया था-ऐसे शुल्क लगाने के अनुबंध के खंडों को आई. पी. सी. एल. द्वारा अनुबंध में प्रवेश करने के पांच साल बाद चुनौती दी गई थी-खंडों को रद्द कर दिया गया-औचित्य-आयोजित:हालांकि विवाद एक वाणिज्यिक अनुबंध उद्भूत हुई है, लेकिन रिट याचिका बनाए रखने योग्य थी-अनुबंध में प्रवेश करने के समय, गेल देश में प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के न्यायालय में एकाधिकारवादी स्थिति का आनंद ले रहा था-आई. पी. सी. एल. के पास, उपयुक्त बुनियादी ढांचे की स्थापना में महत्वपूर्ण खर्च करने के बाद, गेल के साथ समझौता करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था-इस प्रकार, पक्षों के बीच लेन-देन में एक स्पष्ट सार्वजनिक तत्व शामिल था-रिट अधिकार क्षेत्र का उपयोग तब किया जा सकता है जब राज्य, अपने संविदात्मक लेन-देन में भी, कुछ हद तक निष्पक्षता का प्रयोग करने या किसी भी भेदभाव का अभ्यास करने में विफल रहता है-'परिवहन शुल्क के नुकसान' को लागू करने में गेल की कार्रवाई प्रत्यक्ष रूप से भेदभावपूर्ण थी, जहां तक कि आई. पी. सी. एल. को आवंटन के संदर्भ में अपनी पाइपलाइन बनाने के लिए अनिवार्य किया गया था।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

326

327

मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड बनाम मेसर्स इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन। लिमिटेड।

ए.

आंशिक रूप से अपीलों को अनुमति देते हुए, न्यायालय ने

यह अभिनिर्धारित किया कि **-1.1** यद्यपि विवाद एक वाणिज्यिक अनुबंध उद्भूत हुई है है, यह पता लगाएं कि खंडों को चुनौती देने वाली रिट याचिका बनाए रखने योग्य थी। यह विवादित नहीं है कि गेल एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है और इस प्रकार संविधान के अनुच्छेद **12** के अनुसार 'राज्य' की परिभाषा के तहत योग्य है। अनुबंध में प्रवेश करने के समय, गेल देश में प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के संबंध में एकाधिकारवादी स्थिति का आनंद ले रहा था। आई. पी. सी. एल. के पास उपयुक्त बुनियादी ढांचे की स्थापना में एक महत्वपूर्ण खर्च होने के कारण गेल के साथ समझौता करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। इस प्रकार, पक्षों के बीच लेन-देन में एक स्पष्ट सार्वजनिक तत्व शामिल था। इसके अलावा, रिट अधिकार क्षेत्र का प्रयोग तब किया जा सकता है जब राज्य, अपने संविदात्मक लेन-देन में भी, कुछ हद तक निष्पक्षता का प्रयोग करने या किसी भी भेदभाव का अभ्यास करने में विफल रहता है। वर्तमान मामले में, 'परिवहन शुल्क के नुकसान' को लागू करने में गेल की कार्रवाई प्रत्यक्ष रूप से भेदभावपूर्ण थी, क्योंकि आई. पी. सी. एल. को आवंटन पत्र के संदर्भ में अपनी पाइपलाइन बनाने के लिए अनिवार्य किया गया था और वह गेल की एच. बी. जे. पाइपलाइन का बिल्कुल भी उपयोग नहीं कर रही थी। इस प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता है कि केवल इसलिए कि एक वैकल्पिक उपाय उपलब्ध था, न्यायालय को संविधान के अनुच्छेद **226** के तहत अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने का विकल्प चुनना चाहिए और पक्षों को नागरिक उपचार के लिए खारिज कर देना चाहिए।

**[पैरा 19] [336-बी-ई]**

बी.

सी.

डी.

ई.

**1.2** यह भारत के संविधान के अनुच्छेद **14** के उल्लंघन में एक मनमानी कार्रवाई होने के अलावा बेहद अनुचित और अन्यायपूर्ण होगा कि आई. पी. सी. एल. पर परिवहन शुल्क के नुकसान के लिए आरोप लगाया जाता है जब उसे अपनी पाइपलाइन बिछाने और एच. बी. जे. पाइपलाइन के माध्यम से गैस का परिवहन नहीं करने के लिए अनिवार्य किया जाता है। यह कार्रवाई अनुच्छेद **14** में निहित गैर-भेदभाव के सिद्धांत का भी उल्लंघन करती है। आई. पी. सी. एल., जो अपनी खुद की पाइपलाइनों का उपयोग कर रही है, को अन्य वाणिज्यिक संस्थाओं के समान माना जा रहा है जो गेल द्वारा निर्धारित एच. बी. जे. पाइपलाइन के माध्यम से गैस ले जा रहे हैं। यह तब अधिक होता है जब संबंधित प्राधिकरण, यानी एमओपीएनजी द्वारा मूल्य निर्धारण आदेश प्राकृतिक गैस के लिए एक निश्चित मूल्य निर्धारित करते हैं। एक बुनियादी सिद्धांत पर, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता है कि एक बार गेल पाइपलाइन बिछाने के बाद, वह अनुबंध में अपनी लागत में संरचना का हकदार है। हालाँकि, मुद्दा केवल इतना ही नहीं है। सार्वजनिक क्षेत्र के दो उद्यमों ने एम. ओ. पी. एन. जी. द्वारा किए गए आवंटन के अनुसरण में एक अनुबंध किया। आई. पी. सी. एल. के लिए भी समय की कमी थी। बहुत भारी हो रहा है

एफ.

जी.

एच.

328 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 2 एस. सी. आर.

ए.

गांधार संयंत्र के निर्माण में खर्च, आई. पी. सी. एल. के पास अनुबंध में प्रवेश करने के अलावा बहुत कम विकल्प थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आई. पी. सी. एल. प्रमुख प्राधिकरण यानी एम. ओ. पी. एन. जी. द्वारा प्रदान की गई आवंटन शर्तों का पालन करने के लिए बाध्य था। इस प्रकार, जैसा कि आई. पी. सी. एल. द्वारा अनुरोध किया गया था, उन्हें "होब्सन की पसंद" का सामना करना पड़ा, जहाँ उन्हें या तो अनुबंध छोड़ना पड़ा या परिवहन शुल्क लगाने वाले खंडों को स्वीकार करना पड़ा। उपरोक्त कारकों के संदर्भ में, यह कहा जा सकता है कि गेल ने अनुबंध पर हस्ताक्षर करते समय एक असमान सौदेबाजी शक्ति का प्रयोग किया था। गेल ने भले ही एच. बी. जे. पाइपलाइन के निर्माण में भारी निवेश किया हो, लेकिन साथ ही आई. पी. सी. एल. ने अपनी पाइपलाइनों के निर्माण में भी भारी निवेश किया था। यह एक विकल्प नहीं था, बल्कि एमओपीएनजी द्वारा जारी आवंटन पत्र का एक अधिदेश था। इस प्रकार, यह स्वीकार करना मुश्किल है कि एक ओर आई. पी. सी. एल. को अपनी खुद की पाइपलाइन बिछानी चाहिए, और साथ ही एच. बी. जे. पाइपलाइन का उपयोग किए बिना भी परिवहन के नुकसान का भुगतान करना चाहिए। इस प्रकार रिट याचिका की स्थिरता और आई. पी. सी.

एल. के मामले में परिवहन शुल्क के नुकसान से संबंधित खंडों को रद्द करने के पहलू के कारण अपील (ओं) को खारिज कर दिया जाता है। हालाँकि, राहत को तीन साल की अवधि तक सीमित करना उचित माना जाता है, जहाँ तक धनवापसी का संबंध है, रिट याचिका दायर करने की तारीख से, यानी **09.03.2006**।[पारस **20-23,26**] **[336-एफ-एच; 337-ए-सी, ई-एफ, 338-सी-डी]**

बी.

सी.

डी.

ई.

जोशी टेक्नोलॉजीज इंटरनेशनल इंक. बनामभारत संघ

& ओआरएस। (2015) 7 एससीसी 728:[2015] 6 एस. सी. आर. 1042; लिपटन

इंडिया लिमिटेड और ओआरएस बनामभारत संघ और अन्य **(1994) 6**

एससीसी 524:[1994] 3 पूरक।एस. सी. आर. 600; ए. बी. एल. इंटरनेशनल

लिमिटेड और ए. एन. आर. बनामनिर्यात ऋण गारंटी निगम

भारत और ओआरएस। (2004) 3 एस. सी. सी. 553-पर निर्भर।

एफ.

केंद्रीय अंतर्देशीय जल परिवहन निगम लिमिटेड

बनाम ब्रजोनाथ गांगुली (1986) 3 एस. सी. सी. 156:[1986] 2

एससीआर **278**; रामेश्वर और ओआरएस. वी.हरियाणा राज्य और

ओआरएस (2018) 6 एससीसी 215:[2018] 5 एस. सी. आर. 205; कल्परज

धर्मशी और अन्न. वी.कोटक इन्वेस्टमेंट एडवाइजर्स लिमिटेड और

जी.

एन. आर. (2021) 10 एस. सी. सी. 401-संदर्भित।संदर्भित निर्णय

**[2015] 6 एससीआर 1042**

पर भरोसा किया गया |

पारस **11**

**1994] 3 पूरक।एस. सी. आर. 600 पर निर्भर**

पारस **11** ए

एच.

329

मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड बनाम मेसर्स इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन। लिमिटेड।

**[1986] 2 एससीआर 278**

संदर्भित किया गया है

पैरा **12**

**[2018] 5 एससीआर 205**

संदर्भित किया गया है

पैरा **14**

**(2004) 3 एस. सी. सी. 553**

पर भरोसा किया गया |

पैरा **15 (2021) 10 एस. सी. सी. 401** पैरा **16** में निर्दिष्ट है।

सिविल अपील न्यायनिर्णय:2010 की सिविल अपील Nos.3504-3505।

बी.

2006 के एल. पी. ए. Nos.1622 और 2007 के 1012 में अहमदाबाद में गुजरात उच्च न्यायालय के दिनांकित 17.06.2008 के निर्णय और आदेश से। तुषार मेहता, एस. जी., मान्यता लोढ़ा, सुश्री सुरभी अरोड़ा, प्रत्यूष श्रीवास्तव, अधिवक्तागण अपीलार्थी के लिए।

सी.

डॉ. ए. एम. सिंघवी, वरिष्ठ अधिवक्ता, राघव शंकर, अविष्कार सिंघवी, स्नेहल काकरानिया, प्रतीक कुमार, संजीव कपूर, केयूर गांधी, राहिल पटेल, अमित भंडारी, सुश्री मेलानी डिसूजा, रोहित घोष, मेसर्स खेतान एंड कंपनी, अधिवक्तागण उत्तरदाताओं के लिए।

डी.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

संजय किशन कौल, जे।

1. मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड (संक्षेप में 'गेल'), यहाँ अपीलार्थी, भारत सरकार का एक उपक्रम है, जिसे 16.08.1984 पर निगमित किया गया है, जो मुख्य रूप से प्राकृतिक या संबद्ध गैस के उपयोग के लिए सेवाएं प्रदान करने की गतिविधि में लगा हुआ है। इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड (संक्षेप में 'आई. पी. सी. एल. '), प्रत्यर्थी नं. 1 इसमें, जो पहले एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम था, पेट्रोकेमिकल्स के निर्माण में लगा हुआ है। यह जून 2002 से एक सार्वजनिक उपक्रम नहीं रह गया, जब सरकार की विनिवेश नीति के अनुरूप इसके 26 प्रतिशत शेयर रिलायंस पेट्रोइन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड को बेच दिए गए। उत्तरदाता नं. 2 आई. पी. सी. एल. का शेयरधारक है और प्रत्यर्थी सं. 3 भारत का संघ है।

ई.

एफ.

पृष्ठभूमि

2. आई. डी. 1 पर, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार (इसके बाद 'एम. ओ. पी. एन. जी.' के रूप में संदर्भित), प्राकृतिक गैस के लिए आवंटन और मूल्य निर्धारण प्राधिकरण ने आई. पी. सी. एल. को प्राकृतिक गैस के आवंटन के लिए एक पत्र जारी किया। आई. पी. सी. एल. को सी-2 और सी-3 अंशों के निष्कर्षण के लिए हजीरा से आई. पी. सी. एल. की गांधार इकाई (दहेज में) को ठोस आधार पर 0.85 एम. एम. एस. सी. एम. डी. अर्ध-समृद्ध गैस आवंटित की गई थी। इसे निम्नलिखित शर्तों के अधीन बनाया गया था:

जी.

एच.

330

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

ए.

“(i) गेल के साथ गैस आपूर्ति अनुबंध पर हस्ताक्षर करना।

(ii) पाइपलाइनों को हजीरा से गांधार में आई. पी. सी. एल. इकाई तक अर्ध-समृद्ध गैस के परिवहन की आवश्यकता होती है और कम गैस को वापस हजीरा तक पहुँचाने के लिए मेसर्स आई. पी. सी. एल. द्वारा बिछाया जाएगा।

2. आपसे अनुरोध है कि आप इस पत्र के जारी होने के 60 दिनों के भीतर गेल के साथ आवश्यक गैस आपूर्ति अनुबंध करें, जिसमें विफल रहने पर उपरोक्त आवंटन आवंटन के लिए उत्तरदायी होगा।”

बी.

पत्र में समय अवधि के महत्व को देखते हुए, पक्षों ने गैस आपूर्ति अनुबंध की शर्तों पर बातचीत शुरू की। इस प्रकार आई. पी. सी. एल. ने प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के लिए 09.11.2001 पर गेल के साथ एक अनुबंध किया। आई. पी. सी. एल. ने लगभग 500 करोड़ रुपये का निवेश करके गांधार में एक संयंत्र स्थापित किया था। 4500 करोड़ रु. इसके अलावा, आवंटन पत्र की शर्तों को पूरा करने के लिए, इसने हजीरा और गांधार के बीच लगभग 500 करोड़ रुपये की लागत से पाइपलाइन बिछाई। 354 करोड़।

सी.

डी.

3. अनुबंध के अनुसार, गैस की आपूर्ति की पद्धति यह थी कि गेल को उत्पादक, यानी ओ. एन. जी. सी. से प्राकृतिक गैस प्राप्त होती थी, जिसने बॉम्बे हाई परियोजना से हजीरा में उसी की खरीद की थी। इसके बाद, गैस को आई. पी. सी. एल. द्वारा निर्धारित पाइपलाइनों के माध्यम से हजीरा से आई. पी. सी. एल. के गांधार संयंत्र तक पहुँचाया गया। अप्रयुक्त गैस को फिर आई. पी. सी. एल. की पाइपलाइनों का उपयोग करके हजीरा को वापस भेज दिया गया।

ई.

4. हम इस स्तर पर ही गैस को ले जाने के तरीके के महत्व को चिह्नित कर सकते हैं, क्योंकि हमारे सामने विवाद इस विशेष पहलू के इर्द-गिर्द घूमता है। एक तरफ, आवंटन की शर्तों के अनुसार, आई. पी. सी. एल. को अपनी खुद की पाइपलाइनें बिछानी थीं (जो इस तरह बिछाई गई थीं), और अकेले उन पाइपलाइनों का उपयोग गैस ले जाने के लिए किया जाता था। दूसरी ओर, अनुबंध के संदर्भ में 'परिवहन शुल्क के नुकसान' के लिए गेल द्वारा शुल्क लगाया जाता है। यह पक्षों के बीच अनुबंध का यह पहलू है जो भारत के संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत आई. पी. सी. एल. द्वारा दायर रिट कार्यवाही में निर्णय का विषय रहा है। आई. पी. सी. एल. दिनांकित 19.09.2006 और 11.04.2007 के आदेशों के संदर्भ में विद्वान एकल न्यायाधीश के समक्ष और दिनांकित 17.06.2008 के आदेश के माध्यम से लेटर्स पेटेंट अपील में डिवीजन बेंच के समक्ष सफल हुआ।

एफ.

जी.

5. हम इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि हालांकि दोनों पक्षों के बीच अनुबंध पर 09.11.2001 पर हस्ताक्षर किए गए थे, लेकिन अनुबंध के खंड 10.01 और 4.04 को चुनौती केवल 09.03.2006 पर दी गई थी, यानी पांच साल बाद। इस बीच आई. पी. सी. एल. का सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम बनना बंद हो गया।

एच.

मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड बनामएम/एस। इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लिमिटेड. [संजय किशन कौल, जे.] ए.

ए.

6. दूसरा विकास गेल का मई 2016 में परिवहन शुल्क के नुकसान को रोकने का निर्णय है। इस प्रकार, उपरोक्त खंडों के तहत एकत्र की गई कुल राशि रु। 134 करोड़ रुपये से पहले इसे एकल न्यायाधीश द्वारा रद्द कर दिया गया था और डिजीजन बेंच द्वारा बरकरार रखा गया था।

बी.

7. संविदात्मक संदर्भ को समझने के लिए, प्रासंगिक दो खंड नीचे निकाले गए हैं:

“ 4.04 खरीदार, अनुच्छेद 10 में उल्लिखित गैस की कीमत के अलावा, विक्रेता को रु। 4,16,700-(चार लाख सोलह हजार सात सौ रुपये) विक्रेता द्वारा अंतिम संचालन और नियमित रखरखाव के लिए लागू करें/शुल्कों के साथ मानव शक्ति की तैनाती के कारण पाक्षिक सेवा शुल्क के लिए, जो आगे की डिलीवरी के स्थान पर गैस की डिलीवरी और खरीदार द्वारा वापसी डिलीवरी के स्थान पर वापस की गई गैस की रसीद से जुड़ा हुआ है। उपरोक्त सेवा शुल्क किसी भी सामग्री की आवश्यकताओं जैसे उपकरण, उपकरण आदि और टर्मिनल को संचालन योग्य स्थिति में बनाए रखने के लिए पुर्जों/वस्तुओं/उपकरणों से अलग है। ऐसी सामग्री की आवश्यकता के कारण किसी भी उपभोक्ता को गैस की आपूर्ति में कोई भी बाधा खरीदार के जोखिम और लागत पर होगी। उपर्युक्त सेवा शुल्क में वार्षिक विश्राम के आधार पर 3 (तीन) प्रतिशत प्रति वर्ष की वृद्धि की जाएगी, जो अनुच्छेद 2 के तहत उल्लिखित गैस आपूर्ति शुरू होने की निर्धारित तिथि के बाद 1 अप्रैल से प्रभावी होगी। उपरोक्त के अलावा, खरीदार विक्रेता को परिवहन शुल्क का भी भुगतान करेगा, जैसा कि एच. बी. जे. पाइपलाइन प्रणाली के साथ समय-समय पर लागू होता है, अनुच्छेद 5 के तहत प्रदान किए गए सूत्र के अनुसार उपयोग की गई गैस की मात्रा/संकुचन के लिए या मीटर स्टेशन संख्या-I पर आगे की डिलीवरी के बिंदु पर मापी गई गैस की मात्रा में अंतर के लिए (अनुच्छेद 4 के तहत उल्लिखित गैस बाई की मात्रा को समायोजित करने के बाद) और मीटर स्टेशन संख्या-II पर रिटर्न डिलीवरी के बिंदु, जो भी अधिक हो। खरीदार इसके बाद अनुच्छेद 11 के अनुसार गैस की आपूर्ति के लिए इनवॉइस के अलावा विक्रेता को उपरोक्त शुल्क का भुगतान सभी लागू करें/शुल्कों के साथ करेगा। बशर्ते कि यदि खरीदार द्वारा चालान प्रस्तुत करने के 3 (तीन) कार्य दिवसों के भीतर उपरोक्त शुल्क का भुगतान नहीं किया जाता है, तो विक्रेता इसके लिए चालान बैंक को ऋण पत्र के विरुद्ध प्रस्तुत करेगा और राशि निकालेगा। खरीदार

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

332

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

बैंक के साथ इस तरह से व्यवस्था करेगा कि ऐसी स्थिति में पूरी एल/सी राशि स्वचालित रूप से बहाल हो जाए।.....

लेख **10-गैस की कीमत**

बी.

10.01 गैस डब्ल्यू. ई. एफ. 1.10.1997 के 1000 (एक हजार) मानक घन मीटर का वर्तमान मूल्य सरकारी मूल्य निर्धारण आदेश सं. एल-12015/3/94-जीपी दिनांक 18.9.1997 (अनुलग्नक-IV) जिसके बाद विक्रेता को गैस की कीमत तय करने का अधिकार होगा जो भारत सरकार के निर्देश, निर्देश, आदेश आदि के अनुसार हो सकता है जो भारत सरकार की उदारीकरण की वर्तमान नीति के अनुसार बाजार से संबंधित होने की संभावना है और खरीदार विक्रेता को गैस की ऐसी कीमत का भुगतान करेगा। उपरोक्त के अलावा, खरीदार एच. बी. जे. पाइपलाइन प्रणाली के साथ-साथ समय-समय पर उपयोग की जाने वाली गैस की मात्रा/संकुचन के लिए विक्रेता परिवहन शुल्क का भी भुगतान करेगा। बशर्ते कि इस प्रकार निर्धारित गैस की कीमत रॉयल्टी, करों, शुल्कों, सेवा/परिवहन शुल्कों और अन्य सभी वैधानिक शुल्कों से अलग है जो वर्तमान में लागू हैं या भविष्य में लगाए जाने वाले हैं। केंद्र या नगर पालिका की राज्य सरकार या किसी अन्य स्थानीय निकाय या निकाय द्वारा विक्रेता द्वारा ओ. एन. जी. सी. एल./अन्य उत्पादकों से गैस की खरीद पर या विक्रेता से खरीदार को बिक्री पर या खरीदार द्वारा प्रसंस्करण के बाद शेष गैस की मात्रा विक्रेता को वापस करने पर देय और ये उपरोक्त मूल्य के अलावा खरीदार द्वारा वहन किए जाएंगे।" (जोर दिया गया) 8.आई. पी. सी. एल. ने उपरोक्त खंडों को मुख्य रूप से इस आधार पर चुनौती दी कि वे सरकारी मूल्य निर्धारण आदेशों दिनांक 30.01.1987, 31.12.1991, 18.09.1997, 30.09.1997 और 20.06.2005 के विपरीत थे, जिसके तहत प्राकृतिक गैस की कीमत तय की गई थी। इसके अलावा, एमओ. पी. एन. जी. द्वारा आवंटन पत्र में अनिवार्य किया गया था कि आई. पी. सी. एल. के संयंत्र में गैस का परिवहन ओ. एन. जी. सी. मीटरिंग स्टेशन से आई. पी. सी. एल. की अपनी पाइपलाइनों के माध्यम से होना चाहिए। इस प्रकार, यह तर्क दिया गया कि गेल द्वारा 'परिवहन शुल्क के

नुकसान' की वसूली मनमाना और अनुचित थी।आई. पी. सी. एल. के पास अनुबंध और आवंटन पत्र के कारण गेल की पाइपलाइनों के माध्यम से गैस परिवहन का विकल्प नहीं था। आई. पी. सी. एल. ने असमान सौदेबाजी शक्ति के आधार पर उपरोक्त खंडों को भी चुनौती दी। यह तर्क दिया गया था कि गेल ने ए पर कब्जा कर लिया था

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

333

मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड बनामएम/एस। इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लिमिटेड. [संजय किशन कौल, जे.] ए.

अनुबंध में प्रवेश करने के समय गैस की आपूर्ति के संबंध में एकाधिकारवादी स्थिति।इसके अतिरिक्त, आई. पी. सी. एल. के पास अनुबंध में प्रवेश करने के लिए एक सीमित समय सीमा थी, विशेष रूप से क्योंकि गैस पटाखा संयंत्र की स्थापना में भारी निवेश किया गया था। नतीजतन, आई. पी. सी. एल. ने उनके द्वारा भुगतान किए गए 'परिवहन शुल्क के नुकसान' की वापसी का दावा किया।एकल न्यायाधीश ने दिनांक 1 के आदेश के माध्यम से इन खंडों को मूल्य निर्धारण आदेशों के विपरीत होने के रूप में रद्द कर दिया, और इस प्रकार अनुचित और अनुचित था।

बी.

9. गेल, उक्त निर्णय से व्यथित होने के कारण, एक लेटर्स पेटेंट अपील को प्राथमिकता दी।इस बीच, आई. पी. सी. एल. ने स्पष्टीकरण/संशोधन के लिए एक आवेदन को भी प्राथमिकता दी, जिसमें गेल को परिवहन शुल्क के नुकसान को वापस करने के लिए निर्देश देने की मांग की गई, क्योंकि स्पष्ट रूप से एकल न्यायाधीश द्वारा ऐसा कोई विशिष्ट निर्देश पारित नहीं विद्वान गया था।आई. पी. सी. एल. के आवेदन को दिनांक 1 के एक आदेश द्वारा अनुमति दी गई थी, जो इस तर्क पर आधारित था कि आई. पी. सी. एल. के दावे को बरकरार रखते हुए, अनजाने में धनवापसी का निर्देश विशेष रूप से पारित नहीं किया गया था।गेल द्वारा डिवीजन बेंच के समक्ष इस बाद के आदेश पर भी हमला किया गया।

सी.

10. डिवीजन बेंच ने एकल न्यायाधीश की टिप्पणियों को दिनांकित 17.06.2008 के आदेश के माध्यम से पुष्टि की, जिससे गेल द्वारा वर्तमान अपील की गई।

डी.

गेल की याचिका:

11. शुरुआत में, गेल की ओर से पेश हुए जाने-माने सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता ने आई. पी. सी. एल. द्वारा दायर रिट याचिका की स्थिरता को चुनौती दी। उन्होंने तर्क दिया कि पक्षों ने अनुबंध के खंड 13.1 के तहत सार्वजनिक उद्यम ब्यूरो में मध्यस्थों की स्थायी मशीनरी के समक्ष मध्यस्थता का प्रावधान विद्वान था। इसके अलावा, इस मामले को विशुद्ध रूप से संविदात्मक प्रकृति का बताया गया था, जिसमें अनुबंध की शर्तों की प्रवर्तनीयता और वैधता शामिल थी, और मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के लिए कोई मामला नहीं बनाया गया था। एक सार्वजनिक कानून तत्व की उपस्थिति रिट अधिकार क्षेत्र के प्रयोग के लिए एक अनिवार्य शर्त थी, जैसा कि स्पष्ट किया गया है

ई.

एफ.

जोशी टेक्नोलॉजीज इंटरनेशनल इंक. बनाम भारत संघ और अन्य। **1.**

आई. पी. सी. एल. का प्रयास, इस तरह के रिट अधिकार क्षेत्र को लागू करके, सीमा के कानून को दरकिनार करने का प्रयास होने का आरोप लगाया गया था, क्योंकि अनुबंध पर बहुत पहले 09.11.2001 में हस्ताक्षर किए गए थे। किसी भी मामले में, रिट याचिका को भी सीमा द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था, जिसे 09.03.2006 पर दायर किया गया था, यानी पांच साल की अवधि के बाद। रिलायंस को लिफ्टॉन इंडिया लिमिटेड और ओआरएस. वी. पर रखा गया था। भारत संघ और अन्य 2 का तर्क है कि दोनों के बीच संचार

जी.

1 (2015) 7 एससीसी 728। 2 (1994) 6 एससीसी 524।

एच.

334

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के बाद परिवहन शुल्क लगाने के बारे में पक्षकार सीमा की अवधि नहीं बढ़ा सके।

12. उन्होंने कहा कि भले ही याचिका विचारणीय हो, लेकिन खंडों को उच्च न्यायालय द्वारा अमान्य नहीं किया जा सकता था। यह बताया गया कि दोनों संगठनों की सौदेबाजी की स्थिति में कोई अंतर नहीं था, जहां किसी को अधिक शक्तिशाली कहा जा सकता है। दोनों संगठन प्रासंगिक समय में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम थे। कहा गया था कि अनुबंध पर सावधानीपूर्वक बातचीत की गई थी और यह पक्षों के बीच आपसी सहमति को दर्शाता था, जैसा कि पूर्व-अनुबंध चरणों में अंतर-संचार से स्पष्ट था। इस प्रकार, खंडों को मनमाना या अनुचित नहीं माना जा सकता था।  
आई. पी. सी. एल और उच्च न्यायालय

बी.

सी.

केंद्रीय अंतर्देशीय जल परिवहन निगम लिमिटेड पर निर्भरता बनाम

ब्रोजनाथ गांगुली 3 को एक सिद्धांत के रूप में गलत स्थान दिया गया था जो नियोक्ता और कर्मचारी के बीच एक सेवा अनुबंध पर लागू होता था जिसे एक वाणिज्यिक अनुबंध में आयात नहीं किया जा सकता था, और वह भी दो सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के बीच। वैकल्पिक याचिका यह थी कि यदि विवादित निर्णयों को बनाए रखा जाता है, तो भी धनवापसी की राशि सीमा की अवधि से आगे नहीं दी जा सकती है, यानी अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के तीन साल बाद।

डी.

13. परिवहन शुल्क के नुकसान के लिए बुनियादी बचाव और औचित्य यह था कि गेल ने अपने स्वयं के बुनियादी ढांचे, यानी एच. बी. जे. पाइपलाइन (हजीरा-बीजाईपुर-जगदीशपुर) के निर्माण में भारी निवेश किया था। गेल के पास उपभोक्ताओं को गैस की आपूर्ति करने के सीमित अवसर थे और इस प्रकार, अपनी वैध रखरखाव लागत की वसूली के लिए परिवहन शुल्क लगाने के समान रूप से सीमित अवसर थे। आवंटन में इस तरह की परिवहन लागतों को लागू करने का पूर्व-अनुमान लगाया गया था।

ई.

एफ.

14. अंत में, इस बात पर जोर दिया गया कि विद्वान एकल न्यायाधीश दिनांकित 19.09.2006 का निर्णय सुनाने के बाद कार्यवाहक अधिकारी बन गए थे। इस प्रकार, स्पष्टीकरण/संशोधन आवेदन के माध्यम से धनवापसी का निर्देश देने का कोई सवाल ही नहीं था। इस तरह के धनवापसी ने अन्यायपूर्ण संवर्धन के सवाल उठाए, क्योंकि आई. पी. सी. एल. ने उनके द्वारा भुगतान किए गए 'परिवहन शुल्क के नुकसान' को अपने ग्राहकों को दे दिया होगा। इस बारे में कि अन्यायपूर्ण संवर्धन क्या है, सॉलिसिटर जनरल ने इसका उल्लेख करने की मांग की

जी.

रामेश्वर और ओआरएस. वी.हरियाणा राज्य और अन्य **4.**

3 (1986) 3 एससीसी 156। 4 (2018) 6 एससीसी 215।

एच.

335

मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड बनामएम/एस। इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लिमिटेड. [संजय किशन कौल, जे.] ए.

ए.

आई. पी. सी. एल. का बचाव:

15. डॉ. ए. एम. सिंघवी, विद्वान वरिष्ठ वकील, ने एक निजी अनुबंध के संबंध में विवादित आदेश और रिट कार्यवाही की रखरखाव क्षमता का बचाव करने की मांग की।परिवहन शुल्क का भेदभावपूर्ण प्रभाव होने का आरोप लगाया गया था क्योंकि आई. पी. सी. एल. के साथ एच. बी. जे. पाइपलाइन का उपयोग करने वाले उपभोक्ताओं के बराबर व्यवहार किया जा रहा था, जबकि आई. पी. सी. एल. अपनी पाइपलाइनों के माध्यम से गैस का परिवहन कर रहा था।याचिका होने के नाते, यह आग्रह किया गया था कि रिट क्षेत्राधिकार उचित उपाय था क्योंकि अनुच्छेद 14 के जनादेश का उल्लंघन करने वाली मनमानी राज्य कार्रवाई के सवाल थे।यह इस तथ्य के बावजूद था कि यह मुद्दा पक्षों के बीच एक अनुबंध से उत्पन्न हुआ था, जैसा कि एबीएल इंटरनेशनल लिमिटेड में भी हुआ था।

बी.

सी.

एन. आर. वी.भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम और अन्य। **5** यह है

इन परिस्थितियों में कि उच्च न्यायालय ने एक वैकल्पिक उपचार की उपलब्धता के बावजूद अपने रिट अधिकार क्षेत्र का प्रयोग किया, अर्थात् मध्यस्थता खंड या दीवानी मुकदमे के माध्यम से। एबीएल इंटरनेशनल 6 पर यह दिखाने के लिए भी भरोसा किया गया था कि परिणामी मौद्रिक राहत दी जा सकती है जहां ऐसी रिट याचिका सफल रही हो।

डी.

16. एक संविदात्मक खंड को समाप्त करने के संबंध में, डॉ. सिंघवी यह इंगित करने के लिए दुखी थे कि ब्रजोनाथ गांगुली के 7 मामले का दायरा बढ़ाया गया था और यह केवल सेवा विवादों तक ही सीमित नहीं था।में।

कल्परज धर्मशी और अन्न बनामकोटक इन्वेस्टमेंट एडवाइजर्स लिमिटेड और

ई.

एन. आर. 8, इस न्यायालय ने एक वाणिज्यिक विवाद में अनुबंध करने वाले पक्षों की सौदेबाजी की क्षमता पर विचार किया क्योंकि अनुबंध में एक अनुचित या अनुचित खंड प्रतीत होता था।

चर्चा:

एफ.

17. हमने पक्षों के वकील की दलीलों और जवाबी दलीलों पर विचार किया है, और यह भी जांच की है कि क्या वर्तमान मामला भारत के संविधान के अनुच्छेद 136 के तहत अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने के लिए इस न्यायालय के लिए उपयुक्त है, भले ही अनुमति दी गई हो।

18. हमारे विचार में, विवाद निम्नलिखित मापदंडों के भीतर है। सबसे पहले, क्या अनुबंध के खंड 4 और 10.01 को चुनौती देने वाली आई. पी. सी. एल. द्वारा दायर रिट याचिका बनाए रखने योग्य थी। दूसरा, ऐसा मानते हुए कि

जी.

5 (2004)3 एससीसी 553। 6 (ऊपर)।

7 (ऊपर)।

8 (2021)10 एससीसी 401।

एच.

336

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

याचिका विचारणीय थी, कि क्या उच्च न्यायालय असमान सौदेबाजी की शक्ति और मनमानेपन/अन्याय के आधार पर उपरोक्त खंडों को अमान्य कर सकता था। तीसरा, क्या धनवापसी के रूप में मौद्रिक राहत दिनांक 19.09.2006 के आदेश के पारित होने के बाद दी जा सकती थी।

बी.

19. यद्यपि विवाद एक वाणिज्यिक अनुबंध उद्भूत हुई है, हम पाते हैं कि खंडों को चुनौती देने वाली रिट याचिका बनाए रखने योग्य थी। यह विवादित नहीं है कि गेल एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है और इस प्रकार संविधान के अनुच्छेद 12 के अनुसार 'राज्य' की परिभाषा के तहत योग्य है। अनुबंध में प्रवेश करने के समय, गेल देश में प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के संबंध में एकाधिकारवादी स्थिति का आनंद ले रहा था। आई. पी. सी. एल. के पास उपयुक्त बुनियादी ढांचे की स्थापना में एक महत्वपूर्ण खर्च होने के कारण गेल के साथ समझौता करने के अलावा कोई

विकल्प नहीं था। इस प्रकार, पक्षों के बीच लेन-देन में एक स्पष्ट सार्वजनिक तत्व शामिल था। इसके अलावा, रिट अधिकार क्षेत्र का प्रयोग तब किया जा सकता है जब राज्य, अपने संविदात्मक लेन-देन में भी, कुछ हद तक निष्पक्षता का प्रयोग करने या किसी भी भेदभाव का अभ्यास करने में विफल रहता है। हम इस न्यायालय के निर्णय से अपने विचार में मजबूत हैं।

सी.

डी.

एबीएल एंटरप्राइजेज **9** और जोशी टेक्नोलॉजीज **10** में निर्णय। वर्तमान में

मामले में, 'परिवहन शुल्क के नुकसान' को लागू करने में गेल की कार्रवाई प्रत्यक्ष रूप से भेदभावपूर्ण थी, क्योंकि आई. पी. सी. एल. को आवंटन पत्र के संदर्भ में अपनी खुद की पाइपलाइन बनाने के लिए अनिवार्य किया गया था और वह गेल की एच. बी. जे. पाइपलाइन का बिल्कुल भी उपयोग नहीं कर रही थी। इस प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता है कि केवल इसलिए कि एक वैकल्पिक उपाय उपलब्ध था, न्यायालय को संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने का विकल्प चुनना चाहिए और पक्षों को नागरिक उपचार के लिए खारिज कर देना चाहिए।

ई.

20. अब, हम उन खंडों की वैधता पर आते हैं जिनके तहत 'परिवहन शुल्क का नुकसान' लगाया गया था। हमारे विचार में, यह भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 के उल्लंघन में एक मनमाना कार्रवाई होने के अलावा बेहद अनुचित और अन्यायपूर्ण होगा कि आई. पी. सी. एल. पर परिवहन शुल्क के नुकसान के लिए आरोप लगाया जाता है जब उसे अपनी पाइपलाइन बिछाने और एच. बी. जे. पाइपलाइन के माध्यम से गैस का परिवहन नहीं करने के लिए अनिवार्य किया जाता है। यह कार्रवाई अनुच्छेद 14 में निहित गैर-भेदभाव के सिद्धांत का भी उल्लंघन करती है। आई. पी. सी. एल., जो अपनी खुद की पाइपलाइनों का उपयोग कर रही है, को अन्य वाणिज्यिक संस्थाओं के समान माना जा रहा है जो गेल द्वारा निर्धारित एच. बी. जे. पाइपलाइन के माध्यम से गैस ले जा रहे हैं। यह तब अधिक होता है जब संबंधित प्राधिकरण, यानी एमओपीएनजी द्वारा मूल्य निर्धारण आदेश प्राकृतिक गैस के लिए एक निश्चित मूल्य निर्धारित करते हैं।

एफ.

जी.

9 (ऊपर)। 10 (ऊपर)।

एच.

मेसर्स गेल (इंडिया) लिमिटेड बनामएम/एस। इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लिमिटेड. [संजय किशन कौल, जे.] ए.

ए.

21. एक बुनियादी सिद्धांत पर, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता है कि एक बार गेल पाइपलाइन बिछाने के बाद, वह अनुबंध में अपनी लागत में संरचना का हकदार है। हालाँकि, मुद्दा केवल इतना ही नहीं है। हम एक ऐसे परिदृश्य का सामना कर रहे हैं जहां दो सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों ने एमओपीएनजी द्वारा किए गए आवंटन के अनुसरण में एक अनुबंध में प्रवेश किया। आई. पी. सी. एल. के लिए भी समय की कमी थी। गांधार संयंत्र के निर्माण में भारी खर्च करने के बाद आई. पी. सी. एल. के पास अनुबंध करने के अलावा बहुत कम विकल्प थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आई. पी. सी. एल. प्रमुख प्राधिकरण यानी एम. ओ. पी. एन. जी. द्वारा प्रदान की गई आवंटन शर्तों का पालन करने के लिए बाध्य था। इस प्रकार, जैसा कि आई. पी. सी. एल. द्वारा अनुरोध किया गया था, उन्हें "होब्सन की पसंद" का सामना करना पड़ा, जहाँ उन्हें या तो अनुबंध छोड़ना पड़ा या परिवहन शुल्क लगाने वाले खंडों को स्वीकार करना पड़ा। उपरोक्त कारकों के संदर्भ में, यह कहा जा सकता है कि गेल ने अनुबंध पर हस्ताक्षर करते समय एक असमान सौदेबाजी शक्ति का प्रयोग किया था।

बी.

सी.

22. वास्तव में, इस तरह का खंड प्रदान करने का संविदात्मक अभ्यास प्रत्येक वाणिज्यिक और सामान्य ज्ञान के विपरीत है और स्पष्ट रूप से मनमाना है, क्योंकि आई. पी. सी. एल. पर किसी भी सामान्य शर्तों के तहत नहीं बल्कि एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए आरोप लगाया जा रहा है। यह उद्देश्य अनुबंध में मौजूद नहीं हो सकता है क्योंकि मुख्य प्राधिकरण, यानी भारत संघ, इसके विपरीत प्रावधान करता है। 23. गेल ने भले ही एच. बी. जे. पाइपलाइन के निर्माण में भारी निवेश किया हो, लेकिन साथ ही आई. पी. सी. एल. ने अपनी पाइपलाइनों के निर्माण में भी भारी निवेश किया था। यह एक विकल्प नहीं था, बल्कि एमओपीएनजी द्वारा जारी आवंटन पत्र का एक अधिदेश था। इस प्रकार, हमारे लिए यह स्वीकार करना मुश्किल है कि एक ओर आई. पी. सी. एल. को अपनी खुद की पाइपलाइन बिछानी चाहिए, और साथ ही एच. बी. जे. पाइपलाइन का उपयोग किए बिना भी परिवहन के नुकसान का भुगतान करना चाहिए। हम गेल के इस तर्क को स्वीकार नहीं करते हैं कि शुल्क केवल इसलिए लगाया जा सकता है क्योंकि गेल ने आम तौर पर उपयोगकर्ताओं के लिए एचबीजे पाइपलाइन बिछाई थी।

डी.

ई.

एफ.

24. इसके अलावा, हम ध्यान दे सकते हैं कि खंडों को रद्द करने के परिणामस्वरूप धनवापसी का निर्देश दिनांकित 11.04.2007 आदेश के माध्यम से उत्पन्न हुआ। यह एक अनुक्रम की प्रकृति में था और इस प्रकार, हमें इसमें हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं मिलता है।

जी.

25. हालाँकि, अब हम इस बात पर विचार करते हैं कि क्या पूरी राशि वापस की जानी है। विद्वान सॉलिसिटर जनरल का वैकल्पिक तर्क था कि किसी भी मामले में, धनवापसी देने में सीमा की अवधि का विस्तार नहीं विद्वान जा सकता था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि परिवहन शुल्क के नुकसान के मुद्दे को आई. पी. सी. एल. द्वारा विभिन्न संचारों के आदान-प्रदान में उठाया गया था।

एच.

338

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के बाद पक्षकार। हालाँकि, यह आई. पी. सी. एल. को न्यायालय से संपर्क करने का लाइसेंस नहीं दे सकता है जब वह उचित समझे। इस प्रकार, खंडों को रद्द करने को बरकरार रखते हुए, हमारा विचार है कि न्यायालय का दरवाजा खटखटाने में आई. पी. सी. एल. की देरी के कारण धनवापसी को रिट याचिका दायर करने की तारीख से पहले तीन साल की अवधि तक सीमित किया जाना चाहिए। यहाँ हम लिप्टोन इंडिया लिमिटेड एंड ओआरएस में निर्णय से ताकत प्राप्त करते हैं। 11 उपरोक्त मामले को संदर्भित किया गया, जिसमें कहा गया था कि रिट याचिका पर भेदभाव की याचिका के कारण विचार किया गया था, लेकिन तब राहत केवल मुकदमे में दावा किए जाने तक ही सीमित थी।

बी.

निष्कर्ष:

सी.

26. इस प्रकार हम रिट याचिका की स्थिरता के पहलू और आई. पी. सी. एल. के मामले में परिवहन शुल्क के नुकसान से संबंधित खंडों को रद्द करने के लिए अपील (ओं) को खारिज करते हैं। हालाँकि, हम राहत को तीन साल की अवधि तक सीमित रखना उचित समझते हैं, जहाँ तक रिट याचिका दायर करने की तारीख से धनवापसी का संबंध है, यानी 09.03.2006।

डी.

27. हमारा यह भी विचार है कि यह धनवापसी आज से दो महीने की अवधि के भीतर की जानी चाहिए, जिसमें विफल रहने पर देय तिथि से 8 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज लगेगा। यदि धनवापसी निर्धारित समय के भीतर की जाती है, तो हम देय राशि पर ब्याज लगाने के लिए इच्छुक नहीं हैं।

ई.

28. अपीलों को उपरोक्त शर्तों में अनुमति दी जाती है जिससे पक्षकारों को अपना खर्च खुद वहन करना पड़ता है।

दिव्या पांडे

अपीलों को आंशिक रूप से अनुमति दी गई।

एफ.

(सहायक: रूपांशी विरंग, एलसीआरए)

जी.

11 (ऊपर)।

एच.